श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

श्रमण संघीय प्रथम पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी म.

श्रमण संघीय द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री आनन्दऋषि जी म.

श्रमण संघीय तृतीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य श्री देवेन्द्र मुनि जी म.

श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर
आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.

जैन प्रकाश सम्पादकीय कार्यालय
जैन भवन, 12, शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-01
Tel.: 011-23363729, 23365420
Mob.: 9019731906
Email.: aissjc1906@gmail.com
Website.: https.//jainconference.org

सम्पादक - डॉ. अमित जैन
Mob. 9837394448, 9997889995
E-mail : amitraijain78@gmail.com

Address
Here

जून - द्वितीय, अंक - 14 विक्रम संवत् - 2083 वीर संवत् - 2552 ईस्वी सन् - 2026

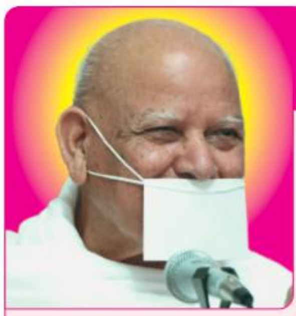

श्रमण संघीय तीर्थवासी ज्ञानी बनें

- युग प्रधान आचार्य सम्राट् पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

(गतांक से आगे)

जबकि ज्ञानी इसके विपरीत सुख का स्थान जीव आत्मा जानकर, जीव में स्थित अनंत सुख का अनुभव शुक्ल ध्यान से प्राप्त कर लेता है। अतः जीव को केन्द्र बिन्दू बनाने वाला कर्म क्षय करते हुए अनंत सुख का अनुभव करता है व नये कर्म के बन्धन को भी रोकता है।

अनंत शक्ति-अज्ञानी व्यक्ति जीवन भर शक्ति पाने के लिए पुद्गलों में, भोजन में शक्ति मानकर अपरिमित भोजन करता है, विषयों का सेवन करता है। भोजन में शक्ति है इस भ्रांति से उसका सारा ध्यान शक्ति पाने के लिए भोजन की तरफ रहता है, विभिन्न प्रकार के पौष्टिक भोजन करके भी वह कमजोर रहता है। यहाँ तक कि तप करके भी उसका ध्यान ज्यादा भोजन की ओर रहता है व उपवासपूर्ण कर वह भरपूर भोजन करके वजन बढ़ा लेता है व अधिक भोजन से उसे अनेक रोग हो जाते हैं। ज्ञानी वो है जो जानता है शक्ति जीव आत्मा में है अतः जब वह विश्राम करता है या जीव का ध्यान मन, वचन, काया के पार जाकर करता है तो उसे शक्ति मिलती है अतः शक्ति आत्मा में है ये जिसकी श्रद्धा है तथा शक्ति की खोज जीव में करता है वह ज्ञानी है।

अनंत दर्शन अर्थात् जिसकी दृष्टि सम्यक् है, सत्य की है वह प्रत्येक जीव में आत्मा के दर्शन करता है सबमें अपने समान आत्मा के दर्शन करता है आत्मा पर श्रद्धा कर 24 घंटे आनन्द में जीता है, पुद्गल को पुद्गल देखता है। आकार व निराकार में भेद का अनुभव करता है उसे दर्शन कहते हैं वह निराकार का ध्यान करता है और 24 घंटे आनन्द शांति व सुख में जीता है।

अस्तित्व से प्रेम-जो जीव अपनी आत्मा से प्रेम करता है व संसार के सभी जीवों में आत्मा के दर्शन करता है 'सोऽहं' को अपने जीवन में घटित करता है अर्थात् प्रत्येक जीव में मेरे समान आत्मा है, मुझे अपनी आत्मा का ध्यान कर अपनी ही आत्मा के गुणों को प्रकटाकर क्षायिक सम्यक्तवी बनकर सबमें निराकार अगुरु लघु गुण के दर्शन करते हुए पंचम गति सिद्धशिला में अपनी अवगाहना को अटल करना है।

ऐसे प्रत्येक तीर्थवासी के जीवन का लक्ष्य पंचम गति सिद्धशिला है, इसके लिए वह अपने जीव को केन्द्र बिन्दु बनाकर वर्तमान देह को तपाकर संयमित कर इसे माध्यम बनाकर शुक्ल ध्यान से प्रबल शत्रु मिथ्यात्व व मोह को क्षय करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़े, यही अमृत महोत्सव पर हार्दिक मंगल कामना।

अध्यक्षीय

पर्यावरण संरक्षण : संयमित जीवन का आधार

- अतुल जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय बंधुओ,
सादर जय जिनेन्द्र।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर सम्पूर्ण विश्व पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के संतुलन की आवश्यकता पर चिंतन करता है। आज मानव सभ्यता विकास के नए आयाम स्थापित कर रही है, किन्तु इसके साथ-साथ पर्यावरणीय चुनौतियाँ भी गंभीर होती जा रही हैं। जलवायु परिवर्तन, जल संकट, प्रदूषण, वनों की कटाई तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने सम्पूर्ण मानवता के समक्ष चिंता का विषय खड़ा कर दिया है।

जैन दर्शन हजारों वर्षों पूर्व से ही प्रकृति के प्रति संवेदनशील और संतुलित जीवनशैली का संदेश देता आया है। अहिंसा, अपरिग्रह और संयम केवल आध्यात्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के भी प्रभावी आधार हैं। जब हम आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करते, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करते हैं तथा प्रत्येक जीव के अस्तित्व का सम्मान करते हैं, तब हम प्रकृति के संरक्षण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

भगवान महावीर का संदेश "जियो और जीने दो" केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि समस्त जीव-जगत और प्रकृति के प्रति हमारी जिम्मेदारी को भी व्यक्त करता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति को भी जीवन का आधार मानकर उनकी रक्षा करना जैन संस्कृति की विशेष पहचान रही है। आज आवश्यकता है कि हम इन मूल्यों को केवल विचारों तक सीमित न रखें, बल्कि अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं।

छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े परिवर्तन का आधार बन सकते हैं। जल संरक्षण, वृक्षारोपण, प्लास्टिक के उपयोग में कमीं, ऊर्जा की बचत तथा स्वच्छता के प्रति जागरूकता जैसे कदम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक परिवार इस दिशा में संकल्पपूर्वक आगे बढ़े, तो आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित और स्वस्थ पर्यावरण प्रदान किया जा सकता है।

आइए, हम सभी पर्यावरण संरक्षण को केवल एक अभियान नहीं, बल्कि जीवन का संस्कार बनाएं। प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, संयमित जीवनशैली और संसाधनों के सदुपयोग के माध्यम से हम एक स्वच्छ, स्वस्थ और संतुलित भविष्य के निर्माण में अपना योगदान दें। इसी शुभ भावना के साथ आप सभी को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक और सक्रिय रहने का संदेश देता हूँ।

सम्पादकीय

जैन समाज का शिक्षा में योगदान विषय पर सरकार की अध्ययन रिपोर्ट : जैन समाज की ज्ञान-परंपरा को राष्ट्रीय मान्यता !

- डॉ. अमितराय जैन - राष्ट्रीय महामंत्री

हाल ही में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग द्वारा जैन समुदाय के शिक्षा क्षेत्र में योगदान पर प्रकाशित अध्ययन रिपोर्ट भारतीय समाज और शिक्षा-जगत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यह रिपोर्ट केवल जैन समुदाय की शैक्षणिक उपलब्धियों का विवरण नहीं देती, बल्कि उस दीर्घकालीन ज्ञान-परंपरा, नैतिक दृष्टि और सामाजिक उत्तरदायित्व को भी रेखांकित करती है, जिसने भारत के सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत की प्राचीन सभ्यता में जैन धर्म सदैव ज्ञान, अध्ययन, शोध और बौद्धिक विमर्श का समर्थक रहा है। जैन आचार्यों, मुनियों और विद्वानों ने प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, गुजराती, कन्नड़, तमिल तथा अन्य अनेक भाषाओं में विशाल साहित्य का सृजन किया। देश के विभिन्न भागों में स्थापित जैन ज्ञान भंडार, पांडुलिपि-संग्रह, पुस्तकालय और शिक्षण संस्थान इस बात के साक्षी हैं कि जैन समाज ने शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक और राष्ट्रीय निर्माण का आधार माना है।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की यह रिपोर्ट इस तथ्य को भी सामने लाती है कि जैन समुदाय देश के सर्वाधिक शिक्षित और साक्षर समुदायों में से एक है।

शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता, आत्मानुशासन, नैतिक जीवन-मूल्यों और सामाजिक सेवा की भावना ने जैन समाज को आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक क्षेत्रों में विशिष्ट पहचान प्रदान की है। आज देश के अनेक प्रतिष्ठित विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, छात्रावास, शोध संस्थान और छात्रवृत्ति योजनाएँ जैन समाज की प्रेरणा और सहयोग से संचालित हो रही हैं।

रिपोर्ट का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वह जैन समुदाय के योगदान को केवल समुदाय विशेष तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे राष्ट्र-निर्माण की व्यापक प्रक्रिया से जोड़कर देखती है। जैन संस्थाओं द्वारा स्थापित शिक्षण केंद्रों में सभी वर्गों और समुदायों के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार जैन समाज की शैक्षणिक सेवाएँ सम्पूर्ण भारतीय समाज के विकास में योगदान देती हैं।

निस्संदेह, भारत के विभिन्न बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समुदायों ने भी शिक्षा और राष्ट्र-विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। किंतु जैन समाज की विशेषता यह है कि उसकी जनसंख्या अत्यंत सीमित होने के बावजूद शिक्षा, उद्योग, व्यापार, चिकित्सा, समाजसेवा, साहित्य, शोध और परोपकार के क्षेत्रों में उसका योगदान अनुपातहीन रूप से अधिक दिखाई देता है। यह उपलब्धि शिक्षा-केंद्रित जीवन-दृष्टि का प्रतिफल है। (शेष पृष्ठ 4 में)

देश में विराजित पूज्य संत-साध्वीजी म. के पावन चरणों में
कोटि-कोटि वंदन एवं श्रद्धापूर्ण नमन

समाजरत्न दानवीर भामाशाह
लाला आनन्द प्रकाश जी जैन
महिलारत्न
स्व. श्रीमती कमलेश आनन्द प्रकाश जी जैन

NAMO eWaste

Namo e waste Management Ltd.
E waste & lithium in battery recycling
EPR facility
8130393628 admin@namoewaste.com

Vardhman Recycling LLP
Old vehicles recycling with certificate of disposal
Plastic recycling EPR facility
8130393611 vardhmanautorecycling@gmail.com

नरेश आनन्दप्रकाश जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

रचना नरेश जैन
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक
जैन कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रीय महिला शाखा

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

जैन प्रकाश

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

– प्रवर्तक पू. डॉ. राजेन्द्र मुनि जी म.सा.

उपरोक्त आलेख के शीर्षक से ही मन में एक प्रसन्नता का भाव संचारित हो रहा है। प्रत्येक शब्द अपनी आध्यामिक सुगन्ध बिखेर रहा है। शीर्षक का प्रथम शब्द श्रमण अपने आप में त्याग का, वैराग्य का सूचक है। भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर स्वामी की परम्परा का बोध देता है। जिनका सम्पूर्ण जीवन ज्ञान दर्शन चारित्र तपमय रहा है, जिनकी वाणी से सम्पूर्ण जगत को संयम की प्रेरणा प्राप्त हुई है। जो तिण्णाणं तारयाणं की पावन प्रेरणा के संस्थापक रहे हो, ऐसे महाश्रमणों को वन्दन करने की प्रेरणा श्रमण शब्द हमें प्रदान करता है। इसके साथ जुड़ा हुआ संघ शब्द भी हमें सम्प संगठन की प्रेरणा दे रहा है। यहाँ संघ शब्द से अभिप्राय तीर्थंकरों द्वारा स्थापित उस संघ से रहा है जिसके भीतर साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका रूपी चतुर्विध संघ समाहित हैं जो हमें पाँच महाव्रत बारह व्रतों की पावन प्रेरणा प्रदान कर रहा है।

ऐसे ज्ञानी-ध्यानी, जपी-तपी संयमी आत्माओं से निर्मित यह हमारा धर्म संघ हमें हमेशा धर्म प्रेरणा दे रहा है व देता रहेगा। एक-एक श्रमण भी उर्जावान होता है, तो जहाँ समूह रुपेण श्रमण संघ में विराजमान हो वह कितनी उर्जावान है। इसके साथ ही अविचल शब्द अपने में अड़िग रहने की प्रेरणा प्रदान कर रहा है। हमें गुणों में सदा अडिग रहना है। संसार की मोह माया की आंधी में भी अविचल रहना है। भौतिक प्रलोभनों में न बहकर अपने जीवन को संघ व संघ आज्ञा में समर्पित रखना है। अविचल भावों से सदा आगे बढ़ते चले जाना है।

ऐसा यह महान संघ सदा-सदा हमारा मंगल कल्याण करता है। प्राणी जीवन में सदैव मंगल की कामना, चाहना रखता है। कोई भी अमंगल नहीं चाहता है। संघ में हमें मंगल की इच्छा हो तो, ऐसे महान संघ में सम्मिलित हो जाना चाहिए। हमारी जीवन यात्रा का लक्ष्य णमो लोए सव्व साहूणं से लेकर णमो सिद्धाणं सिद्ध पद की प्राप्ति हो। बीच के पदों को पार करना है चाहे वो उवज्झायाणं हो, आयरियाणं हो या अरिहंताणं हो। हमें तो सिद्धा-सिद्धिं मम दिसन्तु की विशुद्ध भावना रखनी है। यहाँ श्रमण संघ भगवान महावीर के समस्त श्रमण समुदाय को दर्शाता है, किन्तु इस लेखन का अभिप्राय श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ से है।

हृदय में तो समस्त सम्प्रदाय जिनमें श्वेताम्बर, दिगम्बर साथ ही स्थानकवासी, तेरापंथी सभी के प्रति वंदन भाव है। इस श्रमण संघ की चर्चा के अन्तर्गत वर्तमान आचार्य सम्राट चतुर्थ पट्टधर ध्यानयोगी डॉ. शिवमुनि जी म. की आज्ञा में विचरणशील करीब तेरह सौ साधु-साध्वी जी से है। जिस संघ की स्थापना अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस जिसे श्रमण संघ की मातृ संस्था पुकारा जाता है। उसी के सद्प्रयासों से सन् 1952 सादड़ी सम्मेलन में विधिवत हुई है। यद्यपि इसके पूर्व श्रावकों द्वारा अथक प्रयासों से राजस्थान की पुण्य धरा अजमेर में साधु-सम्मेलन हो चुका था जो विक्रम संवत 1990 चैत्र शुक्ला दशमी तद्नुसार 5 अप्रैल 1933 में सम्पन्न हुआ। यह वह समय था जिसमें साधनों की कमियाँ थी। विचरण आसान नहीं था, फिर भी इस अजमेर साधु-सम्मेलन में पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र के बड़ी संख्या में वन्दनीय आचार्य देव व मुनिराज अपनी-अपनी सम्प्रदाय के प्रतिनिधि के रूप में पधारे।

एकता की भावना से सभी ने अपनी समाचारी विधि नियमों को भी कम ज्यादा करते हुए संघ को एक धागे में पिरोने का पावन लक्ष्य रखा। इरादे नेक हों तो मंजिल दूर नहीं की प्रबल भावना से सभी ने मिलजुल कर श्री वर्धमान संघ की स्थापना की। इस अजमेर साधु-सम्मेलन में करीब 238 मुनिराज व 80 साध्वी जी म. एवं 76 अन्य प्रतिनिधि मुनिराजों का पदार्पण रहा एवं श्रद्धावान 50 हजार से अधिक श्रावक-श्राविका जन अनुमोदना करने पधारे। इसके पूर्व सभी प्रान्तों में प्रांतीय सम्मेलन आयोजित किए गए, जिसमें अजमेर चलो की भव्य भावनाएं प्रदर्शित की गई। भव्य भवन रातों-रात यों ही तैयार नहीं होते, संघ की एकता का यह प्रयास आगे से आगे बढ़ता गया। फलस्वरूप सन् 1952 के सादड़ी सम्मेलन में इस संघ की विधिवत् स्थापना हो गई। जिसका नामकरण श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ रखा गया। सादड़ी संघ व जैन कॉन्फ्रेंस एवं पूज्य मरुधर केशरी जी म. आदि का अपूर्व योगदान रहा। इस सम्मेलन में सभी आचार्यों ने, पदवीधर मुनिराजों ने अपने-अपने सम्प्रदायगत् पदों का त्याग किया एवं सर्वसम्मति से स्थापित इस संघ में प्रथम आचार्य के रूप में पंजाब प्रान्त के आगम ज्ञाता प्रतिष्ठित मुनिराज आत्माराम जी म. को स्थापित किया गया। (क्रमशः)

संगठन की शक्ति : समाज की सबसे बड़ी पूंजी

– विजय जैन, राष्ट्रीय चेयरमैन-जैन कॉन्फ्रेंस

किसी भी समाज की वास्तविक शक्ति उसकी संख्या, संसाधनों अथवा भवनों में नहीं, बल्कि उसकी एकता, संगठन और सामूहिक सोच में निहित होती है। इतिहास साक्षी है कि जिन समाजों ने संगठन को अपनी प्राथमिकता बनाया, उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए निरंतर प्रगति की है। वहीं आपसी मतभेद, संवादहीनता और व्यक्तिगत आग्रह किसी भी समाज की गति को धीमा कर देते हैं।

इतिहास साक्षी है कि जिन समाजों ने संगठन को अपनी प्राथमिकता बनाया, उन्होंने कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए निरंतर प्रगति की है। वहीं आपसी मतभेद, संवादहीनता और व्यक्तिगत आग्रह किसी भी समाज की गति को धीमा कर देते हैं।

आज का समय तेजी से बदल रहा है। नई पीढ़ी नई चुनौतियों और नए अवसरों के बीच आगे बढ़ रही है। ऐसे समय में समाज की जिम्मेदारी केवल परंपराओं को सुरक्षित रखने तक सीमित नहीं है, बल्कि युवाओं को अवसर, मार्गदर्शन और सकारात्मक मंच प्रदान करना भी है। जब समाज का प्रत्येक वर्ग-वरिष्ठजन, महिलाएँ, युवा और बच्चे-एक साझा उद्देश्य के साथ आगे बढ़ते हैं, तब संगठन एक परिवार का स्वरूप ग्रहण कर लेता है।

हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों ने सदैव हमें सहयोग, सह-अस्तित्व और परस्पर सम्मान का संदेश दिया है। अनेकांत का सिद्धांत हमें सिखाता है कि विचार भिन्न हो सकते हैं, लेकिन लक्ष्य एक होना चाहिए। मतभेद स्वाभाविक हैं, मनभेद नहीं। जब संवाद बना रहता है, तब समाधान के द्वार भी खुले रहते हैं।

आज आवश्यकता है कि हम समाज के प्रत्येक सदस्य को जोड़ने का प्रयास करें। संगठन की गतिविधियों में अधिकाधिक सहभागिता, युवाओं को नेतृत्व के अवसर, महिलाओं की सक्रिय भूमिका, सेवा, संस्कार आधारित कार्यक्रमों का विस्तार समाज को नई ऊर्जा प्रदान करेगा। समाज का विकास केवल पदाधिकारियों का दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक सदस्य की जिम्मेदारी है।

आइए, हम सभी मिलकर ऐसा वातावरण बनाएं जहाँ सहयोग प्रतिस्पर्धा पर, समर्पण स्वार्थ पर और समाजहित व्यक्तिगत हित पर सदैव वरीयता प्राप्त करे। एक संगठित, संस्कारित और जागरूक समाज ही आने वाली पीढ़ियों के लिए मजबूत आधार तैयार कर सकता है। इसी विश्वास और संकल्प के साथ हम सभी समाज की एकता, प्रगति और गौरव को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अपना योगदान दें।

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के पदाधिकारी साधु-साध्वीवृंद

युगप्रधान, ध्यानयोगी, आचार्य सम्राट् परम पूज्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा.

उपाध्याय मण्डल

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म.सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म.सा. 'प्रथम'

प्रवर्तक मण्डल

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म.सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म.सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

मंत्री मण्डल

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म.सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म.सा. 'कमलेश' (संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

सलाहकार मण्डल

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म.सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म.सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म.सा. 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डल

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म.सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म.सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस-विश्वस्त मण्डल

श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
श्री बाबूलाल रांका जैन, बैंगलोर	93434 83838
श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
श्री उगमचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, छत्रपति संभाजीनगर	82862 00000
श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010

श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की मातृसंस्था
श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण-कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय महामंत्री : प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विजय जैन, पानीपत	98966 00022
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई	76665 40600
राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567

J. P. Jain Foundation
(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)
सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक
सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन
चेयरमैन — अभय जैन
महामंत्री — अतुल जैन
कोषाध्यक्ष — अमित जैन
- जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।
- भिवानी में फूड वैन द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।
- दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।
- निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।
- जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।
- साधर्मी बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।
MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 9717524774 Email.: foundationjpjain@gmail.com

कथा-कहानी योगिराज की कहानियाँ-प्रवर्तक श्री सुभद्र मुनि

असली चेहरा

एक नगर में प्रतिबिम्ब नामक एक गरीब आदमी रहता था। एक दिन वह घर से जंगल की ओर जा रहा था। उधर अपने घर से एक व्यापारी निकला। वह कहीं व्यापार के लिए जा रहा था। संयोग की बात दोनों की भेंट गली के मोड़ के पास हो गई। व्यापारी ने प्रतिबिम्ब को देखा तो माथे में बल पड़ गये। सोचने लगा - कैसा दुर्योग टकराया है। आज दिन कैसे बीतेगा भगवान ही साक्षी है।

घटा भी ऐसा ही। सारा दिन नगर घूम आया, काम न बना। शाम को घर लौटा तो भूखा। जन-जन से व्यापारी कहने लगा कि प्रतिबिम्ब का मुँह देखने का यह फल मुझे मिला कि पूरा दिन भूख में गुजारना पड़ा।

व्यापारी की बात धीरे-धीरे पक्के रंग में रंग गई। अब सब लोगों में बात पक्की हो गई कि प्रतिबिम्ब को जिस दिन सुबह-सुबह देख लो तो रोटी तक पूरे दिन नसीब नहीं होती! धीरे-धीरे यह बात राजा तक पहुँची। साथ ही यह सिफारिश भी कि यह प्रतिबिम्ब नाम का व्यक्ति हमारे नगर के दुर्भाग्य का सूचक है। इसे नगर से निकाल दिया जाये।

राजा ने अपने नगर से एक नागरिक को बिना परीक्षा किए ही निकालना उचित नहीं समझा। उसने कहा - जाँच कर लेता हूँ फिर न्यायोचित दण्ड दिया जाएगा। राजा ने प्रतिबिम्ब को एक कोठरी में बंद करवा दिया। अगले दिन राजा ने स्वयं ही उससे सुबह-सुबह कुशल पूछ ली। अब राजा का पूरा दिन ऐसी व्यस्तता में बीता कि वह भी भोजन से वंचित हो गया। राजा को नागरिकों की बात पर यकीन हो गया।

राजा ने उसे फाँसी का हुक्म दे दिया। दो दिन का समय बीच में रखा गया। प्रतिबिम्ब ने राजा से निवेदन प्रस्तुत किया - इस नगर से कुछ दूर मेरे गुरु का निवास है। मैं मरने से पहले उनके दर्शन करना चाहता हूँ। राजा ने स्वीकार कर लिया।

प्रतिबिम्ब गुरु-चरणों में पहुँचा और अपनी व्यथा कही। गुरु ने उपाय बता दिया फाँसी से बच निकलने का।

फाँसी का दिन आ गया। फाँसी पर चढ़ने जा रहा था, तभी उसने उपस्थित सभी दर्शक नागरिकों से कहा - मैं तो बदनसीब था ही। इसलिए मुझे फाँसी दी जा रही है कि मेरा मुँह देख लेने भर से लोगों की रोटी उनके नसीब से मैं छीन लेता था। पर मेरे से ज्यादा बदनसीब तो यह राजा है। इसका मुँह देखना तुम्हें और भी अधिक बुरे दिन दिखा सकता है। आज प्रातः मैंने राजा का मुँह देखा था तो मुझे फाँसी मिली है, तुम्हें क्या मिलेगा? भगवान के पास ही हो सकता है इसका उत्तर। मैं तो प्रतिबिम्ब हूँ। बिम्ब तो तुम्हारे भाग्य को अंधेरे में धकेल देने वाला तुम्हारा है।

प्रतिबिम्ब की बात सुनकर उपस्थित लोग तो चौंके ही, राजा भी आश्चर्य चकित रह गया। उसे सोचने को मजबूर होना पड़ा कि मैंने दरिद्र प्रतिबिम्ब का मुँह देखा तो मुझे रोटी नसीब न हुई और इसने मेरा मुँह देखा तो इसे फाँसी मिल रही है। दोनों में बदनसीब कौन है? मैं हूँ या यह?

राजा ने एक क्षण भी न गँवाया। उसने प्रतिबिम्ब की फाँसी की सज़ा तो स्थगित की ही, साथ में जीवन जीने के लिये विपुल धन राशि भी प्रदान की धन प्राप्त कर प्रतिबिम्ब कहने लगा - मैंने पहले जो कहा था, जो सोचा कर गलत है। राजा तो परम भाग्यशाली हैं। इनका मुँह देखने से मेरी जन्मभर की दरिद्रता धुल गयी है।

संस्कारों से जुड़े बचपन की आवश्यकता

- जसवंत जैन, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

आज के आधुनिक और तकनीक प्रधान वातावरण में बच्चों का अधिकांश समय मोबाइल, टीवी और डिजिटल माध्यमों में व्यतीत हो रहा है। बदलती जीवनशैली के कारण पारिवारिक संवाद, नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक जुड़ाव धीरे-धीरे कम होता दिखाई दे रहा है। ऐसे समय में आवश्यक है कि नई पीढ़ी को केवल औपचारिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि संस्कारों, अनुशासन और मानवीय मूल्यों से भी जोड़ा जाए। बाल्यकाल में प्राप्त संस्कार ही भविष्य में व्यक्ति के चरित्र, विचार और जीवन दिशा का आधार बनते हैं।

गर्मी की छुट्टियाँ और चातुर्मास का पावन काल बच्चों एवं युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यंत उपयुक्त अवसर है। यदि इस अवधि में संस्कार शालाओं, धार्मिक शिक्षण शिविरों, ध्यान, प्रार्थना, स्वाध्याय, नैतिक शिक्षा, योग तथा जैन संस्कृति आधारित गतिविधियों का नियमित आयोजन किया जाए, तो बच्चों में अनुशासन, करुणा, अहिंसा, संयम, सेवा और भारतीय संस्कृति के प्रति स्वाभाविक जुड़ाव विकसित होगा। इससे उनमें आत्मविश्वास, सकारात्मक सोच और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना भी मजबूत होगी।

चातुर्मास केवल साधु-संतों की आराधना का अवसर नहीं, बल्कि समाज और विशेषकर बच्चों में संस्कार जागरण का अभियान भी बनना चाहिए। आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज की सभी शाखाएँ एवं स्थानीय संस्थाएँ मिलकर बच्चों के लिए नियमित संस्कार शालाएँ संचालित करें, ताकि आने वाली पीढ़ी आधुनिकता के साथ-साथ अपनी संस्कृति, परंपरा और नैतिक मूल्यों से भी गहराई से जुड़ी रहे। यही संस्कारित पीढ़ी भविष्य में समाज और राष्ट्र को सही दिशा प्रदान करेगी।

सेवा : समाज को जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम

- विनय कुमार जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस

मानव जीवन की सार्थकता केवल स्वयं के विकास में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में भी निहित है। सेवा एक ऐसा श्रेष्ठ माध्यम है, जो व्यक्ति को समाज से, समाज को संवेदनाओं से और संवेदनाओं को मानवता से जोड़ता है। सेवा का वास्तविक अर्थ केवल आर्थिक सहयोग नहीं, बल्कि समय, श्रम, ज्ञान और सद्भावना का समर्पण भी है।

हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक संस्कारों ने सदैव परोपकार, करुणा और सह-अस्तित्व की भावना को महत्व दिया है। जैन दर्शन का मूल आधार अहिंसा और जीवदया है, जो हमें प्रत्येक प्राणी के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा देता है। जब हम किसी जरूरतमंद की सहायता करते हैं, किसी दुखी व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान लाते हैं या समाजहित के किसी कार्य में अपना योगदान देते हैं, तब सेवा केवल एक कार्य नहीं रहती, बल्कि साधना का रूप धारण कर लेती है।

> आज समाज में अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ हमारी सहभागिता की आवश्यकता है-शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, संस्कार निर्माण, गौसेवा, जीवदया तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की सहायता।

आज समाज में अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ हमारी सहभागिता की आवश्यकता है-शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, संस्कार निर्माण, गौसेवा, जीवदया तथा आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की सहायता। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार थोड़ा-सा समय और सहयोग समाज को समर्पित करे, तो बड़े से बड़ा परिवर्तन संभव है।

विशेष रूप से युवाओं को सेवा गतिविधियों से जोड़ना समय की आवश्यकता है। सेवा के माध्यम से उनमें नेतृत्व, संवेदनशीलता, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है। यही संस्कार आगे चलकर एक सशक्त और जागरूक समाज का निर्माण करते हैं।

आइए, हम सेवा को अवसर नहीं, बल्कि अपना कर्तव्य मानें। समाज, राष्ट्र और मानवता के कल्याण के लिए किया गया प्रत्येक छोटा प्रयास भी अमूल्य होता है। सेवा का दीपक जितना अधिक जलता है, उतना ही अधिक प्रकाश फैलाता है। इसी भावना के साथ हम सभी सेवा, सहयोग और समर्पण के मार्ग पर आगे बढ़ें तथा समाज में सकारात्मक परिवर्तन के वाहक बनें।

गौसेवा : संस्कृति, करुणा और कर्तव्य का प्रतीक

- गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई (पीह)

भारतीय संस्कृति में गौ केवल एक पशु नहीं, बल्कि मातृत्व, करुणा, सेवा और सहअस्तित्व का प्रतीक मानी गई है। सदियों से गौ हमारी धार्मिक आस्था, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण आधार रही है। इसी कारण गौ को "गौ माता" के सम्मानित स्वरूप में देखा जाता है।

गौसेवा केवल भोजन या आश्रय देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दया, संवेदना और जीवमात्र के प्रति प्रेम की भावना का परिचायक है। जो व्यक्ति तन-मन और धन से गौसेवा करता है, वह वास्तव में करुणा और मानवता के उच्च आदर्शों का पालन करता है।

तन से सेवा - गौशाला में श्रमदान, देखभाल और संरक्षण।

मन से सेवा - गौवंश के प्रति श्रद्धा, संवेदना और शुभभावना।

धन से सेवा - गौशालाओं, चारे, चिकित्सा एवं संरक्षण कार्यों में सहयोग।

इन तीनों प्रकार की सेवाएँ समान रूप से महान और पुण्यदायी मानी गई हैं। गौसेवा करने वाले सभी दानवीर, सेवाभावी कार्यकर्ता एवं गौभक्त वास्तव में समाज की अमूल्य विरासत को सुरक्षित रखने का कार्य कर रहे हैं। ऐसे सेवाधर्मी व्यक्तित्व धन्य हैं, जिनके प्रयासों से असंख्य गौवंश को संरक्षण और जीवन का सहारा मिलता है।

आइए, हम सभी अपनी सामर्थ्य के अनुसार तन-मन और धन से गौसेवा में सहभागी बनें और करुणा, सेवा तथा संस्कार की इस महान परंपरा को आगे बढ़ाएँ।

"गौसेवा केवल धर्म नहीं, बल्कि दया, संस्कृति और मानवता की जीवंत साधना है।"

M.J. Home Furnishing

Manufacturer of Bedsheet, Mink Blanket, Bright Velvet Dohar, Polar Blanket, AC Quilt Fabric

Alipur Khalsa, Khotpura Road, Kohand, Karnal

Mob: 8053018933, 8727890101

E-mail: mjhome025@gmail.com

Vijay Jain

National Chairman - Jain Conference, New Delhi

प्रमाद से प्रमोद
सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक-गुरुभक्त अतुल जैन

(गतांक से आगे)

अध्याय 21

नाभि का तनाव-अस्तित्व का भय

(गहन विस्तार)

यदि छाती नियंत्रण का केंद्र है, तो नाभि अस्तित्व का केंद्र है। छाती में आहत पहचान रहती है। नाभि में मूल भय। जब व्यक्ति गहराई से असुरक्षित महसूस करता है, जब भविष्य का भय उसे पकड़ता है, जब आधार हिलता हुआ लगता है-तो उसका अनुभव अक्सर नाभि में होता है। नाभि केवल शरीर का मध्य बिंदु नहीं है। यह स्थिरता, आधार और अस्तित्व का प्रतीक है।

1. नाभि-जीवन का प्रथम केंद्र : गर्भ में शिशु का पोषण नाभि के माध्यम से होता है। नाभि जीवन की पहली कड़ी है। अस्तित्व से सीधा संबंध। इसलिए नाभि का क्षेत्र गहरी असुरक्षा और सुरक्षा दोनों से जुड़ा हुआ है। जब यह केंद्र संतुलित हो, तो व्यक्ति भीतर स्थिर अनुभव करता है।

2. अस्तित्व-भय क्या है? : अस्तित्व-भय सूक्ष्म है। यह केवल मृत्यु का भय नहीं है। यह है-"यदि मैं असफल हो गया तो?" "यदि सब छिन गया तो?" "यदि मैं महत्वहीन हो गया तो?" यह पहचान के विलीन होने का भय है। यह भय नाभि में कसाव के रूप में अनुभव हो सकता है।

3. भविष्य की चिंता और नाभि : जब व्यक्ति भविष्य की अत्यधिक चिंता करता है, तो ऊर्जा नीचे स्थिर नहीं रह पाती। नाभि में हल्का तनाव बना रहता है। श्वास पेट तक पूरी नहीं जाती। भीतर एक अदृश्य असुरक्षा बनी रहती है। यह दीर्घकालीन भविष्य-भय का संकेत है।

4. कर्ताभाव और नाभि : कर्ताभाव कहता है-"मुझे सब करना है।" पर भीतर छिपा संदेश होता है-"यदि मैं न करूँ तो मैं सुरक्षित नहीं हूँ।" यह सुरक्षा की शर्त है। जब अस्तित्व को कर्म से जोड़ दिया जाता है, तो नाभि में दबाव बढ़ता है।

5. नियंत्रण और आधार : नियंत्रण की जिद का गहरा कारण अस्तित्व-भय ही है। यदि व्यक्ति भीतर स्थिर नहीं है, तो वह बाहर व्यवस्था बनाकर अपने भय को शांत करना चाहता है। पर बाहरी व्यवस्था भीतरी असुरक्षा को स्थायी रूप से नहीं मिटा सकती।

6. नाभि और श्वास : नाभि की सबसे सरल चिकित्सा है-श्वास को वहाँ तक ले जाना। धीरे-धीरे गहरी श्वास लें। श्वास को पेट तक जाने दें। नाभि को हल्के से फैलते हुए महसूस करें। यह संकेत देता है कि आप सुरक्षित हैं। शरीर धीरे-धीरे fight-or-flight अवस्था से बाहर आता है।

7. स्वीकृति और आधार : जब व्यक्ति स्वीकार करता है-"अनिश्चितता जीवन का हिस्सा है।" "सब मेरे नियंत्रण में नहीं है।" "मैं परिणाम से बड़ा हूँ।" तो नाभि का तनाव ढीला पड़ता है। स्वीकृति आधार बनती है।

8. नाभि में स्थिरता का अनुभव : जब ध्यान सिर से उतरकर नाभि में स्थिर होता है, तो विचारों की गति कम हो जाती है। ऊर्जा नीचे ठहरती है। मन का शोर कम होता है। यह स्थिरता गहरी होती जाती है यदि अभ्यास नियमित हो।

9. भय को दबाना नहीं : नाभि के तनाव को मिटाने की कोशिश न करें। पहले उसे स्वीकार करें। यदि भय है, तो उसे नाम दें। "हाँ, मैं अभी असुरक्षित महसूस कर रहा हूँ।" यह स्वीकार ही उपचार की शुरुआत है।

10. अंतिम स्पष्टता : नाभि का तनाव अस्तित्व-भय का संकेत है। भविष्य-चिंता, असुरक्षा और नियंत्रण की जिद यहीं से जन्म लेती है। जब श्वास नाभि से जुड़ती है और सजगता भय को देखती है, तो भीतर स्थिरता जन्म लेती है। अगले अध्याय में हम समझेंगे-मूलाधार की असुरक्षा जीवन को कैसे प्रभावित करती है।

(क्रमशः)

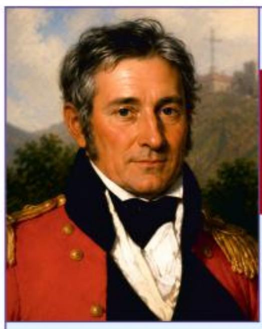

जैन दर्शन के विदेशी विद्वान श्रृंखला

कर्नल कॉलिन मैकेंजी : जैन साहित्य, पांडुलिपि-संरक्षण और भारतीय परंपराओं के महान अन्वेषक!

- प्रोफेसर डॉ. आंचल जैन

भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन में कुछ विदेशी विद्वानों का योगदान इतना महत्त्वपूर्ण रहा है कि उनके बिना भारत की प्राचीन ज्ञान-परंपराओं का आधुनिक पुनर्पाठ संभव नहीं माना जा सकता। कर्नल कॉलिन मैकेंजी ऐसे ही विलक्षण विद्वानों में अग्रगण्य हैं। स्कॉटलैंड में जन्मे मैकेंजी केवल एक प्रशासनिक अधिकारी या सर्वेक्षक भर नहीं थे, बल्कि भारतीय धर्म, दर्शन, इतिहास, स्थापत्य, शिलालेख, ताड़पत्रीय पांडुलिपियों और विशेष रूप से जैन साहित्य के गंभीर अध्येता भी थे। भारत के प्रथम "सर्वेयर जनरल" के रूप में कार्य करते हुए उन्होंने दक्षिण भारत और दक्कन क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहरों का जो विशाल संकलन तैयार किया, वह आज भी भारतीय इतिहास के अध्ययन की आधार भूमि माना जाता है।

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में जब पाश्चात्य जगत में जैन धर्म के विषय में अत्यल्प और भ्रमपूर्ण जानकारी उपलब्ध थी, तब मैकेंजी ने भारतीय विद्वानों, जैन आचार्यों और पुराणिकी विशेषज्ञों के सहयोग से जैन धर्म की स्वतंत्र पहचान को स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। उस समय यूरोपीय विद्वानों का एक बड़ा वर्ग जैन धर्म को बौद्ध धर्म की शाखा मानता था, किन्तु मैकेंजी ने अपने अनुसंधानों, शिलालेखों और प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन के आधार पर यह प्रमाणित किया कि जैन धर्म एक स्वतंत्र, प्राचीन और अत्यंत समृद्ध दार्शनिक परंपरा है।

मैकेंजी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने भारतीय ज्ञान-परंपराओं को केवल प्रशासनिक दृष्टि से नहीं देखा, बल्कि उन्हें संरक्षित करने योग्य सांस्कृतिक धरोहर माना। उन्होंने दक्षिण भारत, कर्नाटक, तमिल प्रदेश तथा आंध्र क्षेत्र में व्यापक यात्राएँ कर हजारों ताड़पत्रीय एवं हस्तलिखित पांडुलिपियों का संग्रह किया। इन पांडुलिपियों में जैन आगम, प्रबंध, पुराण, वंशावलियाँ, तीर्थ-माहात्म्य, राजकीय अभिलेख, दार्शनिक टीकाएँ तथा स्थानीय इतिहास से संबंधित बहुमूल्य सामग्री सम्मिलित थी। उस समय अनेक जैन भंडारों और मठों में सुरक्षित ये ग्रंथ समय, उपेक्षा और जलवायु के कारण नष्ट होने की स्थिति में थे। मैकेंजी ने उन्हें व्यवस्थित रूप से प्रतिलिपिबद्ध कराया और उनके संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की।

जैन साहित्य के पुनरुद्धार में उनके भारतीय सहयोगियों की भूमिका भी अत्यंत उल्लेखनीय रही। कावली वेंकट बोरैया, कावली लक्ष्मय्या तथा पंडित धर्मैया जैसे विद्वानों ने जैन शिलालेखों, प्राचीन ग्रंथों और पुराणिक परंपराओं को समझने में उनकी सहायता की। विशेष रूप से जैन पुराणिकी परंपराओं के ज्ञाता विद्वानों और भट्टारकों से मैकेंजी के गहरे संपर्क थे। उन्होंने अनेक जैन मुनियों, आचार्यों और स्थानीय पुराण-वाचकों से संवाद स्थापित कर जैन राजवंशों, तीर्थों और मुनि-परंपराओं की ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित की। इसी क्रम में कनकगिरि क्षेत्र के जैन कवि एवं विद्वान देवचंद्र द्वारा रचित 'राजावली कथासार' का विशेष उल्लेख आवश्यक है। मैकेंजी के आग्रह पर तैयार इस ग्रंथ ने जैन राजवंशों और दक्षिण भारत की जैन परंपराओं के इतिहास को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया। यह केवल साहित्यिक कृति नहीं थी, बल्कि जैन इतिहास के पुनर्निर्माण का एक महत्वपूर्ण स्रोत सिद्ध हुई।

श्रवणबेलगोला की उनकी यात्रा जैन इतिहास-अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यहाँ उन्होंने गोम्मटेश्वर प्रतिमा का विस्तृत विवरण तैयार किया तथा वहाँ उपलब्ध शिलालेखों और परंपरागत आख्यानों के आधार पर चंद्रगुप्त मौर्य एवं भद्रबाहु से संबंधित ऐतिहासिक परंपराओं को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। उनके अभिलेखीय कार्य ने जैन इतिहास को आधुनिक अकादमिक विमर्श में स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया।

मैकेंजी द्वारा संकलित विशाल सामग्री आज "Mackenzie Manuscripts" के नाम से विश्वविख्यात है। इसमें हजारों पांडुलिपियाँ, अभिलेख, शिलालेखों की प्रतिलिपियाँ, चित्र, वंशावलियाँ और सांस्कृतिक टिप्पणियाँ सम्मिलित हैं। इनका एक बड़ा भाग आज भी जैन धर्म, जैन दर्शन और दक्षिण भारतीय इतिहास के शोधार्थियों के लिए अमूल्य स्रोत बना हुआ है। वस्तुतः यदि मैकेंजी और उनके भारतीय सहयोगियों का यह प्रयास न हुआ होता, तो जैन साहित्य और इतिहास की अनेक दुर्लभ सामग्री संभवतः काल के गर्त में विलुप्त हो जाती।

जैन धर्म और जैन साहित्य के संरक्षण, पुनरुद्धार तथा वैश्विक परिचय में कर्नल कॉलिन मैकेंजी का योगदान इसलिए अद्वितीय माना जाता है क्योंकि उन्होंने भारतीय परंपराओं को औपनिवेशिक दृष्टि से नहीं, बल्कि ज्ञान-संपदा के रूप में देखा। उन्होंने भारतीय विद्वानों के सहयोग से जैन धर्म की प्राचीनता, उसके दार्शनिक वैभव और उसकी साहित्यिक परंपरा को विश्व पटल पर प्रतिष्ठित किया। जैन दर्शन के विदेशी विद्वानों की श्रृंखला में उनका नाम भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के एक ऐसे अध्येता के रूप में सदैव स्मरणीय रहेगा, जिसने पांडुलिपियों, शिलालेखों और परंपराओं के माध्यम से जैन धर्म के इतिहास को पुनर्जीवित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(पृष्ठ 1 का शेष 'सम्पादकीय')

आज आवश्यकता इस बात की है कि जैन समाज इस रिपोर्ट का स्वागत केवल सम्मान के रूप में न करे, बल्कि इसे आत्ममंथन और भविष्य की कार्ययोजना के रूप में भी देखे। नई पीढ़ी को उच्च शिक्षा, शोध, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, भारतीय ज्ञान - परंपरा, पांडुलिपि संरक्षण और मूल्य - आधारित शिक्षा से जोड़ना समय की मांग है। यदि जैन समाज अपनी प्राचीन ज्ञान-संपदा और आधुनिक शिक्षा के बीच सशक्त सेतु स्थापित कर सके, तो वह भविष्य में भी राष्ट्र के बौद्धिक नेतृत्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग की यह रिपोर्ट वस्तुतः जैन समाज की उस ऐतिहासिक भूमिका की आधिकारिक स्वीकृति है, जिसे वह सदियों से निभाता आया है। यह दस्तावेज बताता है कि शिक्षा, ज्ञान, करुणा, अहिंसा और सामाजिक उत्तरदायित्व के जैन आदर्श केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं हैं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण की सशक्त आधारशिला भी हैं। इसलिए इस रिपोर्ट का स्वागत जैन समाज के साथ-साथ उन सभी लोगों द्वारा किया जाना चाहिए जो भारत के ज्ञान-आधारित, समावेशी और नैतिक भविष्य में विश्वास रखते हैं।

श्री मरुधर केसरी गुरुभ्यो नमः
देवानुप्रिय सेठ सा श्री माणकचंद सा श्रीमती रूप लता जी बोहरा की पावन स्मृति में
नरेश - बबिता, हर्ष - साधना, सौ. कां. करिश्मा, थिया बोहरा जैन - मुम्बई - जोधपुर

जय गुरू रूप

जय गुरू मरुधर केसरी

जय गुरू सुकन
कोटिशः वंदन नमन
HaloVerse Entertainment Pvt Limited. Mumbai
Jupiter City Developers India Pvt. Ltd. Mumbai
XL Energy Ltd.
नरेश बोहरा जैन
राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन - जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
कार्याध्यक्ष - पावन धाम, जैतारण, राजस्थान
7766540600 Jainn07@gmail.com

वर्तमान का सर्वाधिक चिंतनीय विषय...

30-35 साल तक के बच्चों के विवाह नहीं हो रहे है?

प्रस्तुति-संतोष जैन राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस

एक 24 वर्षीय लड़की के पिताजी को नजदीक के रिश्तेदार ने शादी के लिए एक रिश्ता बताया कि लड़का शहर में नौकरी करता है। दिखने में खूबसूरत है। अच्छे व्यवहार वाला है माँ-बाप भी अच्छे और पैसे वाले हैं, लड़के की उम्र 25 साल है, सबकुछ अच्छा है। लड़की के पिताजी ने कहा कि वो सब ठीक है पर लड़के की कमाई कितनी है? बिचौलिए ने बताया की अच्छी है। 30 हजार रुपये है। पैसे वाले परिवार से है। लड़की के पिताजी ने जवाब दिया कि-शहर में 30 हजार से क्या होता है? परिवार की कमाई से हमें क्या लेना-देना।

बिचौलिए ने कहा कि एक दूसरा लड़का भी है। दिखने में ठीक-ठाक है। तनख्वाह अच्छी 50 हजार है। सिर्फ उसकी उम्र थोड़ी ज्यादा है। वह 28 साल का है। लड़के के पिताजी ने कहा कि 50 हजार? शहर में 1BHK फ्लैट भी वह खरीद सकता है क्या? सिर्फ 50 हजार में? तो मेरी बेटी को कैसे खुश रख पायेगा वो। बिचौलिए ने हिम्मत नहीं हारी और बताया कि एक और भी है। लड़का दिखने मे ठीक-ठाक है। सिर्फ थोड़ा मोटा है, थोड़े से बाल झड़ गए है दिमाग से काम करने के कारण तनख्वाह भी ज्यादा है। एक लाख महीना है पर उम्र मात्र 32 साल है। देखो अगर आपको जँचता हो तो। लड़की के पिताजी ने गुस्से में कहा कि क्या चाटना है एक लाख पगार को? मेरी बेटी को तो खूबसूरत ही लड़का ही चाहिए और वो भी अकेला रहने वाला या बहुत छोटा परिवार। कमाई भी ज्यादा होनी चाहिए, वरना लड़की को खुश कैसे रखेगा? मेरी लड़की भी कमाती है, कोई अच्छा रिश्ता बताइये जी लड़का कम उम्र का हो।

ऐसे ही बातो में 3 से 5 साल निकल गए। फिर बिचौलिए को बुलाकर बात की उसने कहा कि अब मेरे पास आपकी लड़की के अनुरूप 30 से 35 साल वाले लड़के ही मेरी नजर में है। आप बोलो तो बताऊ, लड़की के पताजी 'कोई भी लड़का बताइये, इस उम्र में कहीं शादी हो जाये, ये क्या कम बड़ी बात है? लड़की की उम्र भी तो 29/30 हो रही है। अब मेरी लड़की ही बहुत बड़ी हो गयी है तो मैं ज्यादा क्या उम्मीद रखूँ। ऐसी बातें करके लड़की और लड़कों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ रोज देखती हूँ। अंत में समझौता ही करते देखा जाता है। आप अपने आस-पास देखेंगे, तो बहुत बार शादी के बाद व्यक्ति का सब कुछ चला जाता है इसलिए पैसे को ही एकमात्र आधार नहीं बनाये।

सिर्फ एक सवाल का उत्तर दें कि जब आपकी शादी हुई थी तब आप कितना कमाते थे? आज क्या आपके पास नहीं है। लड़का-लड़की दोनों बराबर है ऐसे वक्त मे आप भी थोड़ा लड़की एवं लड़के के पीछे खड़े रहिये। पर लड़के-लड़कियों की शादी योग्य उम्र में करिये या होने दीजिए और माँ-बाप द्वारा शादी की बात करने पर घर में झगड़ा आम हो चुका है। अपने माता-पिता की भी ख्वाहिशों एवं पसंद का ध्यान रखिए। आप भले ही डिग्री में उनसे ज्यादा हैं, पर आपके माता-पिता आपसे बहुत ज्यादा तजुर्बेकार हैं और कोई भी अपने बच्चों के लिए गलत रिश्ते नहीं देखता है।

कई जगह तो अच्छे लड़कों को इसलिए छोड़ दिया क्यों कि लड़कियाँ जॉब कर रही थी और पढ़ाई में लड़कों से ज्यादा थी। जबकि लड़के भले ही उनसे कम पढ़े थे, परंतु उनके जैसी सैलरी वाले तो उनके परिवारिक व्यवसाय में जॉब कर रहे थे। शादी के बाद जॉब करने वाली नहीं बल्कि परिवारिक काम में मददगार बहु चाहिए। उनके माता-पिता तो तैयार थे, पर बच्चें नहीं माने। उम्रभर पैसा और नौकरीं तो आते-जाते रहेगी, पर 'जवानी' और 'उम्र' वापस नहीं आएगी। एक बार सोचे। दहेज, दिखावा, महँगी शादी जिन्दगी जीने का तरीका नही है।

हमें जैन होने पर गर्व

प्रेरणादायक लेख प्रतियोगिता

मैं जैन हूँ, मुझे जैन होने पर गर्व है।

क्या हम वास्तव में जैन होने पर गर्व अनुभव करते हैं? क्या हम भगवान महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के संदेशों को जन-जन तक पहुँचा रहे हैं? क्या हम अपने स्वबंधुओं की सेवा-सहयोग में सहभागी हैं? क्या हमें जैन दर्शन रूपी जीवन जीने की कला का वास्तविक ज्ञान है? इन्हीं विचारों को केंद्र में रखते हुए Bhagwan Mahaveer Foundation, Chennai समस्त जैन समाज के लिए एक प्रेरणादायक लेख प्रतियोगिता आयोजित कर रहा है।

विषय : मैं जैन हूँ, मुझे जैन होने पर गर्व है-क्या हम वास्तव में जैन होने पर गर्व अनुभव करते हैं? यह प्रतियोगिता आत्ममंथन, समाज चिंतन एवं अपनी गौरवशाली जैन परंपरा को अभिव्यक्त करने का एक सुंदर अवसर है।

दिशा-निर्देश : प्रतियोगिता सभी आयु वर्ग के लिए है। लेख हिंदी या अंग्रेजी में हो। शब्द सीमा अधिकतम 500 शब्द, लेख पूर्णतः मौलिक होना चाहिए। AI- जनित या नकल की गई सामग्री स्वीकार नहीं होगी। प्रविष्टि के साथ नाम, आयु एवं मोबाइल नंबर अवश्य लिखें। लेख भेजें: info@sugalgroup-com अंतिम तिथिः 30.06.2026 मूल्यांकन : मौलिकता, भाषा एवं अभिव्यक्ति, व्यावहारिक उदाहरण, रचनात्मकता, समग्र प्रस्तुति, पुरस्कार (हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों श्रेणियों में) प्रथम : 5,000, द्वितीय 2,500, तृतीय 1,500, निर्णायक मंडल एवं Bhagwan Mahaveer Foundation का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा। अधिक से अधिक सहभागिता करें तथा परिवार, मित्रों और समाजजनों को भी प्रेरित करें। आइए, अपने जैन होने के गौरव को शब्दों में अभिव्यक्त करें और समाज में नई चेतना जगाएँ।

प्रेषक : सुगालचन्द जैन, चेन्नई

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की ज्ञान प्रकाश योजना के अंतर्गत प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता महावीर प्रश्नावली के विजेताओं की घोषणा

1. सुभद्रा कोठारी जैन, रायपेठा-चेन्नई (तमिलनाडु) — भाग - 1
2. ज्योति राजेन्द्र तातेड़ जैन, नासिक (महाराष्ट्र) — भाग - 3
   मो. : 7588844245
3. श्रीमती प्रभा कल्याणमल जैन, देवास (मध्य प्रदेश) — भाग - 4
   मो. : 9131026457
4. श्रीमती उगमाबाई जैन, मयलापुर (तमिलनाडु) — भाग - 4
   मो. : 9043663113
5. श्रीमती रेखा धर्मेश जैन, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) — भाग - 4
   मो. : 7726894580
6. अनीता कुमारी हीराचंद रांका जैन, चेन्नई (तमिलनाडु) — भाग - 5
   मो. : 9841211709

प्रायोजक : श्री नरेश आनंद प्रकाश जैन - राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश योजना
श्री नरेन्द्र जैन - राष्ट्रीय मंत्री ज्ञान प्रकाश योजना

देशहित में 10 छोटे कदम : ऊर्जा संरक्षण

साथियों, आज देश को हमारी जरूरत है : आइए संकल्प लें, ईंधन बचाओ, देश मजबूत बनाओ !

1. नजदीक के काम पैदल निपटाओ :- 1-2 km तक बाइक-कार नहीं, पैदल या साइकिल से जाएं, सेहत भी, बचत भी!
2. बस-मैट्रो को बनाओ दोस्त, पब्लिक ट्रॉसपोर्ट से जाएं, एक बस 40 कारों के बराबर ईंधन बचाती है।
3. कारपूलिंग अपनाओ, ऑफिस-कॉलेज के 3-4 साथी एक गाडी में चलें, खर्च आधा, दोस्ती डबल।
4. रेड लाइट पर इंजन ऑफ, 30 सेकंड से ज्यादा रुकना है तो गाडी बंद कर दें, सालाना 200 लीटर तक बचत।
5. गाडी रहे फिट, तो माइलेज हिट, टायर में सही हवा, टाइम पर सर्विस = 15% ज्यादा एवरेज।
6. स्पीड लिमिट में चलो, 45-55 km/h पर गाडी चलाएं, न रेस, न तेज ब्रेक - सबसे ज्यादा माइलेज।
7. एक चक्कर में सारे काम, लिस्ट बनाकर निकलें, बार-बार बाजार जाने से ईंधन फालतू जलता है।
8. AC का करो स्मार्ट यूज, कार AC 24&25°C पर रखें, खिड़की खोलकर चल सकें तो AC बंद रखें।
9. पैट्रोल सुबह-शाम भरवाएं, ठंडे टेम्प्रेचर में ईंधन घना रहता है, गर्मी में भाप बनकर उड़ जाता है।
10. बिजली बचत भी देश सेवा, कमरे से निकलो तो लाइट-पंखा ऑफ रखें। बिजली भी कोयले-डीजल से बनती है। ईंधन बचाना सिर्फ पैसे की बचत नहीं, भारत का भविष्य सुरक्षित करना है।

- जैन प्रकाश संपादकीय टीम

पक्षियों के लिए मिट्टी के जल पात्रों का वितरण

अहमदाबाद (गुजरात) : जैन कॉन्फ्रेंस की गुजरात प्रांतीय शाखा द्वारा गर्मी के मौसम में आवश्यकता को देखते हुए पक्षियों के लिए मिट्टी के जल पात्रों का वितरण शिविर का आयोजन किया गया।

शिवाचार्य दीक्षा दिवस के उपलक्ष में गौसेवा

इंदौर (मध्य प्रदेश) : आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी म. के दीक्षा दिवस के उपलक्ष में जैन दिवाकर विचार मंच युवा शाखा मध्य प्रदेश द्वारा प्रांतीय युवा अध्यक्ष सौरभ जैन 'नानू' के नेतृत्व में एवं समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण की उपस्थिति में गौसेवा का लाभ लिया गया। 1000 किलो तरबूज और सब्जी गौशाला में किए वितरित।

प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा

भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)
प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर
प्रेस्टीज फ्रोटेक लिमिटेड	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास
प्रेस्टीज फीड मिल्स	प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर
प्रेस्टीज फैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड	प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

पू. मुकेशमुनिजी म. का हैदराबाद में भव्य नगर प्रवेश

हैदराबाद महानगर के विभिन्न श्रीसंघों ने अपने क्षेत्रों में पधारने के लिए गुरु चरणों में प्रस्तुति की विनती

हैदराबाद (तेलंगाना) : 31 मई को पूज्य दादा गुरुदेव मरूधर केसरी मिश्रीमलजी म., वरिष्ठ प्रवर्तक पू. गुरुदेव श्री रूपचंदजी म. के शिष्य, मरूधरा भूषण, शासन गौरव, प्रवर्तक पू. गुरुदेव श्री सुकनमुनि म. के आज्ञानुवर्ती युवा तपस्वी श्री मुकेश मुनिजी म. आदि ठाणा 4 ने इस वर्ष होने वाले चातुर्मास के लिए रविवार को मोतियों की नगरी हैदराबाद की पावन धरा पर नगर प्रवेश किया तो वातावरण भगवान महावीर और गुरु मरूधर केसरी एवं गुरु रूप रजत के जयकारों से गुंजायमान हो उठा। लोकमान्य संत वरिष्ठ प्रवर्तक पू. गुरुदेव श्री रूपचंदजी म. के वर्ष 1990 में हुए चातुर्मास के 36 वर्ष बाद उनके शिष्यों के चातुर्मासिक आगमन के लिए हैदराबाद की पावन धरा पर आगमन से गुरु भक्तों में असीम उत्साह का माहौल दिखा।

समारोह में खैरताबाद श्रीसंघ के संघपति मीठालाल गांधी, चेयरमैन नौरतमल गुन्देचा, अध्यक्ष शांतिलाल भलगट कार्याध्यक्ष धर्मीचंद बोहरा, महामंत्री रणजीतमल गुन्देचा, उपाध्यक्ष प्रकाशचंद सेहलोत, शांतिलाल गांधी, उत्तमचंद भलगट, विजयराज मुणोत, मंत्री भरतकुमार झारमुथा, सह मंत्री किशोर गुगलिया, मोहनलाल गुगलिया, कोषाध्यक्ष सुरेशचंद सेहलोत, प्रचार मंत्री राहुल मुणोत आदि पदाधिकारियों गुरू भगवंतों का स्वागत अभिनंदन किया। मंच संचालन श्री सज्जनजी गांधी एवं श्री राजेश जी बलाई ने किया।

गुरु भगवंतों का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश 22 जुलाई को त्रयनगर में है। प्रेषक : निलेश कांठेड़

लुधियाना में जैन धार्मिक संस्कार शिविर का शुभारम्भ

1 जून से 10 जून बच्चों को दिए जाएंगे धार्मिक एवं नैतिक संस्कार

लुधियाना (पंजाब) : लुधियाना के एस.एस. जैन सभा के तत्वावधान में तथा समाज नारी रत्न श्रीमती रीचा संदीप जैन, राष्ट्रीय महिला महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस के सौजन्य से एवं उनके द्वारा उद्घाटन के द्वारा तथा आर्य भगवती श्री चंदनबाला महिला संघ, गोल्फ लिंक के आयोजन से बच्चों के जैन धार्मिक संस्कार शिविर का शुभारम्भ उल्लास एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का आरम्भ महामंत्र नवकार के मंगलमय उच्चारण, आचार्य भगवंतों के जयघोष एवं रिबन काटकर किया गया। वर्तमान समय में बच्चों को धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों से जोड़ रही है जो अत्यंत आवश्यक है। संस्कार ही बच्चों को जीवन में सही दिशा प्रदान करते हैं तथा उन्हें आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं। शिविर में 5 से 15 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को जैन धर्म के सिद्धांतों, नवकार मंत्र, जैन संस्कृति, नैतिक मूल्यों, अहिंसा, संयम, गुरु भक्ति एवं जीवनोपयोगी संस्कारों की शिक्षा प्रदान की जाएगी। शिविर की अध्यापिका श्रीमती शिल्पा जैन बच्चों को धार्मिक एवं संस्कारमय प्रशिक्षण देंगी। अपने प्रेरणादायी संबोधन में श्रीमती रीचा संदीप जैन ने कहा कि शिविर का आह्वान राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती संतोष जैन के द्वारा पूरे देश में किया गया है। कार्यक्रम में मंडल अध्यक्षा श्रीमती शुभलता जैन, सचिव श्रीमती श्वेता जैन सहित सभा एवं महिला मंडल की अनेक गणमान्य बहनों एवं सदस्यों ने भाग लिया।

इस अवसर पर श्री सोम प्रकाश जैन, श्री जुगिंदर जैन, श्री निर्मल जैन, श्री सुशील जैन, श्री अमित जैन, श्रीमती शशि जैन, श्रीमती गीतिका जैन, श्रीमती विनु जैन, श्रीमती श्वेता जैन, श्रीमती राधिका जैन, श्रीमती शिल्पा जैन सहित अनेक सदस्य उपस्थित रहे। प्रेषक : रीचा जैन

पूज्य गुरुणी मैया श्री इन्दुप्रभा जी म. के जन्मदिवस पर श्रद्धाभिवंदन

थांवला (राजस्थान) : श्रमण सूर्य प्रवर्तक, मरुधर केसरी, पूज्य गुरुदेव श्री मिश्रीमल जी म., शेरे राजस्थान, अहिंसा दिवाकर, लोकमान्य संत पूज्य प्रवर्तक गुरुदेव श्री रूपचंद जी म. एवं जिन शासनज्योति ज्ञान गंगोत्री पूज्य गुरुणी मैया श्री जैनमती म. की सुयोग्य शिष्या, मधुर व्याख्यानी, वात्सल्यमूर्ति पू. गुरुणी मैया श्री इन्दुप्रभा म. के जन्मदिवस के मंगल अवसर पर 5 जून 1965 को राजस्थान की पुण्यधरा थांवला (पीह थांवला) में कार्यक्रम आयोजित किया गया। वर्तमान में आपका मंगल विहार दक्षिण भारत की ओर है तथा आगामी चातुर्मास (ठाणा 5) हुबली कर्नाटक में घोषित है।

पूज्य गुरुणी मैया अपने जीवन के 61वें जन्मदिवस पर पदार्पण कर रही हैं, तब सम्पूर्ण समाज उनके संयम, साधना, तप, त्याग और धर्मप्रभावना को नमन करता है। आपके जीवन का प्रत्येक क्षण धर्म और मानवता की सेवा को समर्पित रहा है। आपका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अमर स्रोत बना रहे, यही मंगलकामना है।

प्रेषक : गौतमचंद दुग्गड़ जैन

जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा द्वारा महिलाओं को साड़ी वितरण

उदयपुर (राजस्थान) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा द्वारा परमानंद गार्डन स्थित कच्ची बस्ती में सेवा कार्य आयोजित किया गया। इस अवसर पर जरूरतमंद महिलाओं को करीब 50 साड़ियों का वितरण किया गया तथा बच्चों एवं बड़ों को बिस्किट वितरण व संस्कार निर्माण कार्यक्रम किया। जैन कॉन्फ्रेंस महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पा खोखावत जैन ने बच्चों को बडों का आदर करने व व्यसन से दूर रहने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का उद्देश्य जरूरतमंद परिवारों को सहायता पहुँचाना एवं समाज सेवा की भावना को बढ़ावा देना रहा। इस अवसर पर महिला शाखा की अध्यक्षा डॉ. पुष्पा खोखावत जैन, महिला महामंत्री डॉ. शिल्पा नाहर जैन, पुष्पा सुराणा जैन, अनामिका सेठिया जैन, कुसुम डांगी जैन, किरण खोखावत जैन, संतोष मेहता जैन, सुनीता चंडालिया जैन, अनिता भंडारी जैन आदि उपस्थित रहे। प्रेषक : पुष्पा खोखावत जैन

मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान समारोह तथा कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम का आयोजन

अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) : वीर सेना एवं श्री तिलोक रत्न जैन स्थानकवासी परीक्षा बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में आनंदधाम में 10वीं एवं 12वीं कक्षा के सकल जैन समाज के मेधावी विद्यार्थियों के सम्मान समारोह तथा कैरियर मार्गदर्शन कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। यह क्रार्यक्रम आनंदऋषि जी म. की कृपा आशीर्वाद तथा महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी म. की प्रेरणा से संपन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ पू. श्री आलोकऋषि जी म. द्वारा मंगलाचरण, नवकार मंत्र के उच्चारण से किया गया। कार्यक्रम में सीए डॉ. अशोक पगारिया जैन, सचिन डागा, पंकज गुंदेचा एवं दीपक कासवा का सम्मान किया गया। इस दौरान जैन विश्व वेबसाइट का लोकार्पण तथा वीर सेना के नवीन लोगो का विमोचन महाराष्ट्र प्रवर्तक पू. श्री कुंदनऋषि जी के द्वारा किया गया।

प्रेषक : डॉ. अशोक पगारिया जैन

एशियन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा डॉ. सुधीर जैन कोटा का सम्मान

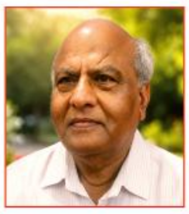

कोटा (राजस्थान) : समाज सेवा, तथा मानवीय मूल्यों के संवर्धन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय मंत्री डॉ. सुधीर हरबंसलाल जैन, कोटा (राजस्थान) को एशियन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा सर्टिफिकेट ऑफ एप्रिसिएशन प्रदान कर सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हें समाज के प्रति उनकी विशिष्ट सेवाओं, मानवता के कल्याण हेतु समर्पण, सामाजिक सुधार, लेखन एवं जैन दर्शन के प्रचार-प्रसार में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया है। डॉ. जैन ने अपने प्रेरणादायी नेतृत्व, निःस्वार्थ सेवा, करुणा, अहिंसा एवं जनकल्याण की भावना से समाज में एक विशिष्ट पहचान स्थापित की है। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से शुभकामनाएं!

R.Mahaveer Chand Ranka
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस
9444204046
E mail : rmrjainplr@gmail.com

With Best Wishes :
R.Mahaveer Chand Ranka
Rajesh kumar-Aarti Jain Vinod kumar-Seema Jain
Dr Rohit, Mohit, Shruthi, Shubh kumar, Aditi Jain

JAIN JEWELLERY 916 HALL MARK SHOWROOM POLUR
JAIN SILKS & READYMADES Fashion for Family POLUR
varnalaya EXCLUSIVE DESIGNER WEDDING COLLECTION POLUR TIRUVANNAMALAI VILLUPURAM
JAIN PETRO Reliance Petroleum Retail Outlet, Diversion Road, Polur 606-803
OXFORD MATRIC HR. SEC SCHOOL
OXFORD COLLEGE OF ENGINEERING POLUR

M. Rajeshkumar Ranka
प्रान्तीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु
9994916455
E mail : rajplr246jj@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

युवाचार्य भगवंत के सान्निध्य में जिनशासन सेवा और भक्ति का नया इतिहास रचने को तैयार धर्मनगरी भीलवाड़ा

भीलवाड़ा (राजस्थान) : धर्मनगरी भीलवाड़ा में इस वर्ष चातुर्मासकाल कुछ खास रहने वाला है क्योंकि यहाँ पहली बार श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट आनंदऋषिजी म. के सुशिष्य एवं वर्तमान आचार्य पू. श्री शिवमुनि जी म. की सेवा और साधना की परम्परा को आगे बढ़ा रहे आगमज्ञाता, प्रज्ञामहर्षि श्रमणसंघीय युवाचार्य भगवंत पूज्य महेन्द्रऋषिजी म. आदि ठाणा का चातुर्मास होने जा रहा है। श्रीसंघ शांतिभवन के तत्वावधान में होने वाले चातुर्मास के लिए मंगल प्रवेश 19 जुलाई को होगा लेकिन पूज्य गुरु भगवंतों का भीलवाड़ा नगर की सीमा में पावन प्रवेश रविवार 7 जून को यश विहार में आगमन के साथ हो गया।

चातुर्मास में जिनवाणी के माध्यम से श्रावक - श्राविकाओं को जैन दर्शन के मूल सिद्धांतों से मजबूती से जोड़ना ही मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। जिनशासन की भावना के अनुरूप चातुर्मासिक आयोजन की उनकी ये पहल श्रमण संघ को मजबूती प्रदान करने वाली है और श्रमण संघ के प्रति आस्थावान चतुर्विद संघ में नया जोश एवं उर्जा का संचार करेगी। युवाचार्य भगवंत का यह चातुर्मास भीलवाड़ा के आध्यात्मिक इतिहास में अनूठी छाप छोड़ने वाला होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।

आगमन के प्रथम कार्यक्रम में ही पूज्य युवाचार्य भगवंत ने संदेश दिया कि वर्ष 2026 का चातुर्मास भीलवाड़ा में जप, तप के साथ जिनशासन आराधना का नया इतिहास रचने जा रहा है। ये चातुर्मास शॉल-माला पहनने और पहनाने, संतों के साथ फोटो और वीडियो बनाने और शेयर करने की होड़ से अलग होकर जैनत्व की मूल भावना के साथ तप त्याग और स्वाध्याय के लिए समर्पित होने जा रहा है।

प्रेषक : निलेश कांठेड़

ऐतिहासिक निर्णय : फाजिलनगर अब होगा 'पावा नगरी/पावागढ़'

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने कुशीनगर जिले के फाजिलनगर का नाम बदलकर 'पावानगरी' (पावागढ़) करने की घोषणा की है। यह निर्णय भगवान महावीर स्वामी से जुड़े इस क्षेत्र के ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व को ध्यान में रखते हुए लिया गया है।

जैन परंपरा के अनुसार कुशीनगर जनपद स्थित यह क्षेत्र प्राचीन पावानगरी के रूप में विख्यात रहा है। मान्यता है कि भगवान महावीर स्वामी ने यहीं अपने अंतिम उपदेश प्रदान किए थे तथा यह स्थान उनके निर्वाण काल की महत्वपूर्ण स्मृतियों से जुड़ा हुआ है। वर्षों से जैन समाज एवं स्थानीय नागरिक इस क्षेत्र को उसकी प्राचीन पहचान लौटाने की माँग करते रहे हैं।

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि फाजिलनगर को उसकी ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक पहचान से जोड़ते हुए अब 'पावानगरी' के रूप में विकसित किया जाएगा तथा भगवान महावीर स्वामी की स्मृतियों को संरक्षित एवं प्रचारित किया जाएगा। यह निर्णय सम्पूर्ण जैन समाज के लिए गौरव और प्रसन्नता का विषय है। इससे भगवान महावीर स्वामी से जुड़े इस पावन स्थल को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिलेगी, साथ ही धार्मिक पर्यटन, सांस्कृतिक संरक्षण एवं स्थानीय विकास को भी बढ़ावा प्राप्त होगा।

उत्तर प्रदेश सरकार एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के प्रति जैन समाज की ओर से कोटि-कोटि धन्यवाद, हार्दिक आभार एवं अभिनंदन। यह ऐतिहासिक निर्णय भगवान महावीर स्वामी की पावन स्मृतियों के संरक्षण तथा भारत की प्राचीन आध्यात्मिक विरासत को सम्मान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा।

– जैन प्रकाश संपादकीय टीम

स्मृति शेष श्रद्धांजलि

वरिष्ठ सुश्रावक श्री नाथूलाल जैन का देवलोकगमन

सवाई माधोपुर (राजस्थान) : श्रमण संघीय श्रावक श्री गिर्राज प्रसाद जैन के पिताजी वरिष्ठ सुश्रावक श्री नाथूलाल जैन उलियाना वाले सवाई माधोपुर का 28 मई को देहावसान हो गया। श्री नाथूलाल जी आचार्य भगवन श्री आनन्द ऋषि जी म. और आचार्य भगवन श्री शिवमुनि जी म. के प्रति गहरी आस्था रखते थे तथा श्रमण संघ के अग्रणी श्रावक थे। श्रमण संघ में आपका योगदान भुलाया नहीं जा सकेगा।

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

राष्ट्रीय जैन युवा मिलन एवं राष्ट्रीय युवा कार्यकारिणी बैठक लोणावला में हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न

लोणावला (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जैन की प्रेरणा से एवं राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जैन के मार्गदर्शन में पंचम जोन युवा शाखा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित "राष्ट्रीय जैन युवा गेट-टुगेदर एवं राष्ट्रीय युवा कार्यकारिणी बैठक" का दो दिवसीय भव्य आयोजन दिनांक 6-7 जून 2026 को ब्लिस निर्वाणा रिसॉर्ट, लोणावला में उत्साह, ऊर्जा, एकता एवं संगठन शक्ति के वातावरण में अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। देश के विभिन्न राज्यों एवं प्रांतों से पधारे युवा साथियों ने अपनी उत्साहपूर्ण सहभागिता से कार्यक्रम की गरिमा को और अधिक बढ़ाया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय शाखा के पदाधिकारीगण, राष्ट्रीय युवा शाखा के पदाधिकारीगण, पंचम जोन शाखा के पदाधिकारीगण, महिला शाखा के पदाधिकारी, विभिन्न राज्यों के युवा अध्यक्ष एवं प्रतिनिधि, सामाजिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, राजनीतिक, खेल, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों के प्रतिष्ठित गणमान्यजन उपस्थित हुए। इस दो दिवसीय प्रेरणादायी यात्रा में गहन चिंतन-मंथन एवं विचार-विमर्श सत्र हुआ। संगठनात्मक सुदृढ़ीकरण पर चर्चा, युवा मार्गदर्शन एवं नेतृत्व विकास सत्र, स्विमिंग पूल पार्टी, लाइव ऑर्केस्ट्रा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्नेह मिलन एवं मनोरंजक गतिविधियाँ, उत्कृष्ट भोजन एवं आतिथ्य सत्कार, सामाजिक एवं व्यावसायिक नेटवर्किंग जैसे कार्यक्रमों का दौर चला।

इस मौके पर पंचम जोन युवा शाखा द्वारा विगत एक वर्ष में संचालित सामाजिक, धार्मिक, संगठनात्मक एवं युवा विकास संबंधी विविध गतिविधियों का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया। उपस्थित सभी सम्माननीय अतिथियों एवं पदाधिकारियों ने पंचम जोन युवा शाखा के कार्यों की मुक्तकंठ से सराहना करते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रदान कीं। इन कार्यों के लिए विशेष योगदान प्रदान करने वाले श्री केतन दुगड़ जैन-राष्ट्रीय युवा मंत्री एवं प्रमुख मार्गदर्शक, श्री आदित्यजी नाहर जैन प्रांतीय युवा कोषाध्यक्ष, श्री आनंदजी दुगड़ जैन-पुणे जिला उपाध्यक्ष, श्री सुरतजी चुत्तर जैन-प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य, पंचम जोन के के समस्त पदाधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य एवं स्वयंसेवक जिन्होंने अपने अथक परिश्रम, समर्पण एवं सेवाभाव से इस आयोजन को सफल बनाया।

इन कार्यक्रम में उत्कृष्ट नियोजन, अनुशासित व्यवस्था, संगठन कौशल, आत्मीय आतिथ्य, युवा शक्ति, संगठन शक्ति, समाज सेवा ऐसे मूल्यों का दर्पण दिखाई दिया। अद्भुत संगम प्रस्तुत करने वाला यह आयोजन नई मित्रता, नई प्रेरणा, नए अवसर एवं नई कार्यदिशाओं का संदेश देकर गया। सभी सहभागी युवा साथियों, सम्माननीय अतिथियों, पदाधिकारियों, सहयोगियों एवं स्वयंसेवकों का हार्दिक आभार एवं अभिनंदन किया गया।

प्रेषक : देवेंद्र पारख जैन

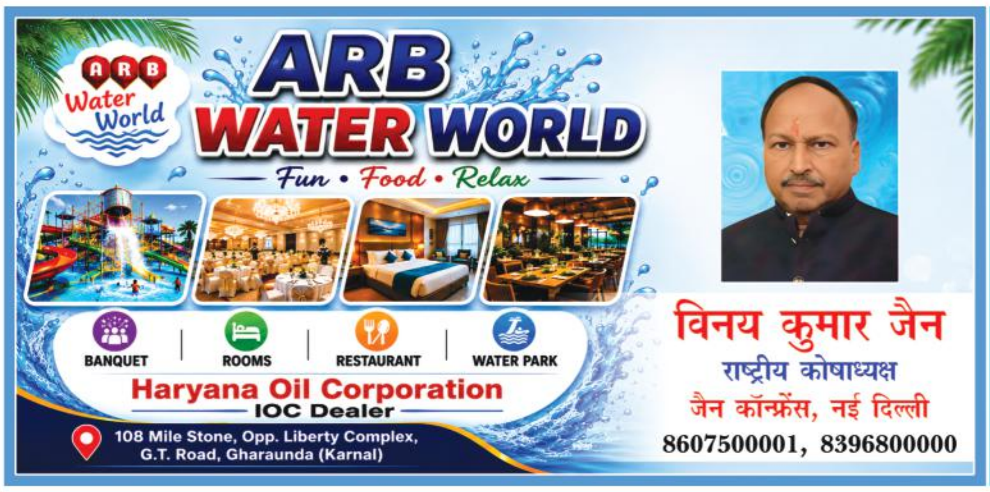

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र
जैन प्रकाश

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U(C)-312/2026-28

Date of Publication : 08-06-2026
Date of Posting : 14/15-06-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

भाषा : हिन्दी ✻ अंक : 14 ✻ पृष्ठ : 8
माह : जून ✻ सप्ताह : 08 जून से 14 जून

मूल्य : ₹ 10

सह-सम्पादक : जसवंत जैन-दिल्ली, पीयूष जैन-इंदौर, गौतम दुग्गड़ जैन-चेन्नई

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के गौरवशाली महापुरुष श्रृंखला...

धर्मवीर श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास झवेरी : जैन कॉन्फ्रेंस, श्रमण संघ और शिक्षा-जागरण के युगनिर्माता

- प्रो. डॉ. अमितराय जैन

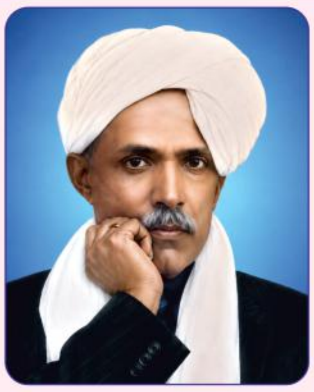

स्थानकवासी जैन समाज के इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे हुए हैं जिन्होंने अपने पुरुषार्थ, दूरदृष्टि और संगठन-कौशल से समाज की दिशा बदल दी। ऐसे ही युगपुरुष थे धर्मवीर श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास झवेरी, जिनका जन्म सौराष्ट्र के मोरवी क्षेत्र में एक धार्मिक एवं संस्कारवान परिवार में हुआ। बाल्यकाल से ही उनमें धर्मश्रद्धा, अध्ययनशीलता, संगठन - क्षमता तथा समाजसेवा की भावना विकसित हो गई थी। व्यवसाय में असाधारण सफलता प्राप्त करने के बाद उन्होंने अपने जीवन को धर्म, समाज और शिक्षा की सेवा के लिए समर्पित कर दिया।

जैन कॉन्फ्रेंस के सशक्त निर्माता : श्री दुर्लभजी झवेरी का सबसे बड़ा योगदान स्थानकवासी जैन समाज के संगठनात्मक इतिहास में दिखाई देता है। उस समय समाज को अखिल भारतीय स्तर पर एक सूत्र में पिरोने के लिए जिस नेतृत्व की आवश्यकता थी, उसे उन्होंने पूरा किया। उन्होंने गुजरात, काठियावाड़, कच्छ, मारवाड़, मालवा, पंजाब, उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण भारत तक व्यापक यात्राएँ कर समाज में नवचेतना का संचार किया।

स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के प्रारम्भिक अधिवेशनों को सफल बनाने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। मोरवी अधिवेशन से लेकर रतलाम, अजमेर, जालंधर, सिकंदराबाद, मलकापुर, बम्बई और बीकानेर जैसे अनेक अधिवेशनों की सफलता के पीछे उनका अथक परिश्रम था। उन्होंने केवल आयोजक के रूप में ही नहीं, बल्कि समाज को एकता, संगठन और जागरण का संदेश देने वाले प्रेरक नेतृत्व के रूप में कार्य किया।

उनके प्रयासों से जैन कॉन्फ्रेंस एक संगठन मात्र न रहकर समाज-सुधार, धर्म-प्रचार और शिक्षा-विस्तार का राष्ट्रीय मंच बन सकी। उन्होंने भारत के कोने-कोने में भ्रमण कर धर्मक्रांति का संदेश पहुँचाया और स्थानकवासी समाज को अखिल भारतीय चेतना से जोड़ा।

स्थानकवासी जैन श्रमण संघ की पृष्ठभूमि के निर्माता : श्री दुर्लभजी झवेरी ने साधु-साध्वी समाज और श्रावक समाज के मध्य समन्वय स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयास किए। समाज में संघ-ऐक्य की भावना विकसित करना उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। उन्होंने साधु-सम्मेलनों और वृहत्तर सामाजिक आयोजनों को सफल बनाकर वह वातावरण निर्मित किया, जिसने आगे चलकर स्थानकवासी जैन श्रमण संघ के संगठनात्मक विकास को मजबूत आधार प्रदान किया।

उनकी दृष्टि केवल तत्कालीन समस्याओं तक सीमित नहीं थी, वे समाज की भावी संरचना को भी देख रहे थे। इसीलिए उन्होंने समाज के विभिन्न गच्छों, क्षेत्रों और संस्थाओं के बीच संवाद, सहयोग और समन्वय की परंपरा को प्रोत्साहित किया। उनके द्वारा बोए गए संगठन और एकता के बीज बाद में श्रमण संघ की सुदृढ़ स्थापना और विस्तार में सहायक बने।

शिक्षा-जागरण के अग्रदूत : श्री दुर्लभजी झवेरी का विश्वास था कि समाज का वास्तविक उत्थान शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। इसी उद्देश्य से उन्होंने जैन ट्रेनिंग कॉलेज की स्थापना में अग्रणी भूमिका निभाई। इस संस्थान का लक्ष्य धर्मनिष्ठ, समाजसेवी और जैन धर्म के प्रचारक युवकों का निर्माण करना था। उन्होंने इस संस्था को केवल स्थापित ही नहीं किया, बल्कि उसके विकास और संचालन में भी निरंतर रुचि ली।

जब यह संस्था कुछ समय के लिए बंद हो गई, तब उसके पुनर्जीवन के लिए भी उन्होंने महत्वपूर्ण प्रयास किए। बाद में इसके विकास को नई दिशा मिली और अनेक प्रशिक्षित कार्यकर्ता समाज को प्राप्त हुए। उनके नेतृत्व में यह संस्थान स्थानकवासी समाज के लिए प्रतिभा-निर्माण का केंद्र बन गया।

इसी प्रकार ब्यावर में जैन गुरुकुल की स्थापना और विकास में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। वे समय-समय पर वहाँ जाकर मार्गदर्शन देते थे। गुरुकुल और प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से उन्होंने ऐसे युवकों की पीढ़ी तैयार की जो धर्म, समाज और राष्ट्र के प्रति समर्पित थी।

ज्ञान, साहित्य और समाजसेवा के संरक्षक : श्री दुर्लभजी झवेरी केवल संगठनकर्ता और शिक्षाविद ही नहीं थे, बल्कि ज्ञान और साहित्य के भी महान संरक्षक थे। उन्होंने सिद्धान्तशाला, काशी विद्यापीठ में जैन चेयर, श्री हंसराज जिनागम फण्ड तथा अनेक शैक्षणिक और धार्मिक संस्थाओं को उदारतापूर्वक सहयोग प्रदान किया। उनकी दानशीलता ने स्थानकवासी समाज में ज्ञान-संवर्धन की नई परंपरा स्थापित की।

वे स्वयं भी एक समर्थ लेखक थे। उनके द्वारा रचित पूज्य श्री लालजी म. का जीवन-चरित्र, वृहत्त साधु-सम्मेलन का इतिहास, सुमित्रा, मधु बिन्दु तथा आज्ञा के अनुभव जैसी कृतियाँ उनकी विद्वत्ता और समाज के प्रति समर्पण का प्रमाण हैं।

श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास झवेरी का जीवन स्थानकवासी जैन समाज के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत है। उन्होंने व्यापारिक सफलता को समाजसेवा का माध्यम बनाया, जैन कॉन्फ्रेंस को राष्ट्रीय स्तर पर सशक्त किया, श्रमण संघ की एकात्म चेतना को पोषित किया तथा शिक्षा, साहित्य और धर्मप्रचार के क्षेत्र में अमिट योगदान दिया। वे केवल एक सफल उद्योगपति या समाजसेवी नहीं थे, बल्कि संगठन, शिक्षा और धर्म-जागरण के ऐसे युगनिर्माता थे जिनके प्रयासों ने स्थानकवासी जैन समाज की आधुनिक संरचना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज जब हम स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस और श्रमण संघ की गौरवगाथा का स्मरण करते हैं, तब धर्मवीर श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास झवेरी का नाम श्रद्धा, कृतज्ञता और सम्मान के साथ अग्रपंक्ति में अंकित दिखाई देता है।

जैन गौरव — एयर मार्शल श्री प्रदुमन जैन

एयर मार्शल प्रदुमन, अनन्तराम जैन के ज्येष्ठ पुत्र थे, इनका जन्म 8 जनवरी 1933 संखतरा, जिला सियालकोट (पाकिस्तान) मे हुआ था। 1947 के देश विभाजन के पश्चात् परिवार जालंधर में आ बसा। एस.एम. जैन कॉलेज अम्बाला से इंटर परीक्षा के बाद 18 वर्ष की आयु मे 1951 में भारतीय वायुसेना में पायलेट ऑफीसर बन देश सेवा के लिये निकल पड़े। वर्ष 1962 में चीन, 1965 में पाकिस्तान के साथ और फिर 1971 में बांग्लादेश की स्वतंत्रता के लिये हुये युद्ध में भाग लिया। वर्ष 1969 में विशिष्ट सेवा पदक से अलंकृत किया और 1988 में इन्हें गौरवशाली एयर मार्शल के पद पर नियुक्त किया। 1990 में उन्हें परम सेवा विशिष्ट सेवा पदक से सम्मानित किया गया। 21 जून 2013 को उनकी जीवन लीला पूर्ण हुई।

वेकेशन ओनरशिप कंपनियाँ शाकाहारी सदस्यों की अस्मिता का ध्यान रखें

- नरेश लोढ़ा जैन, मुंबई राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस

हममें से बहुत से लोगों ने वेकेशन ओनरशिप जैसे की क्लब महिंद्रा, मैजिक हॉलीडेज आदि सदस्यता इस विश्वास के साथ ली थी कि हमारी धार्मिक भावनाओं एवं खान-पान संबंधी आवश्यकताओं का पूरा सम्मान किया जाएगा। आज कई वेकेशन ओनरशिप कंपनियाँ जैन एवं शुद्ध शाकाहारी सदस्यों की बड़ी संख्या का उल्लेख करके नए ग्राहकों को आकर्षित करती हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि अधिकांश रिसॉर्ट्स एवं टाई-अप होटलों में शुद्ध शाकाहारी भोजन के लिए अलग रसोईघर (Separate Vegetarian Kitchen) उपलब्ध नहीं है। भोजन अक्सर उसी रसोई में तैयार किया जाता है जहाँ माँसाहारी भोजन भी बनाया जाता है।

जैन एवं शाकाहारी परिवारों के लिए यह केवल भोजन का विषय नहीं, बल्कि धर्म, आस्था और जीवनशैली का प्रश्न है। केवल "Veg" विकल्प उपलब्ध करवा देना पर्याप्त नहीं है। भोजन की शुद्धता और जैन हाइजीन सुनिश्चित करने के लिए अलग रसोई, अलग बर्तन और अलग भोजन तैयारी व्यवस्था आवश्यक है। यदि कंपनियाँ जैन एवं शाकाहारी समुदाय के भरोसे और सदस्यता से लाभ प्राप्त कर रही हैं, तो उनकी यह जिम्मेदारी भी बनती है कि वे सभी रिसॉर्ट्स एवं टाई-अप होटलों में पूर्णतः अलग शुद्ध शाकाहारी रसोई की व्यवस्था करें।

एक सदस्य की आवाज को अनदेखा किया जा सकता है, लेकिन यदि सैकड़ों सदस्य एक साथ अपनी मांग रखें, तो कंपनी को अवश्य सुनना पड़ेगा। अतः आप सभी से विनम्र निवेदन है कि ऐसी होलीडेज पैकेज देने वाली कंपनियों को ईमेल भेजकर निम्न मांगों का समर्थन करें : - सभी रिसॉर्ट्स में पूर्णतः अलग शुद्ध शाकाहारी रसोई की व्यवस्था, टाई-अप होटलों में भी समान व्यवस्था सुनिश्चित करना, बुकिंग से पहले शाकाहारी रसोई की स्पष्ट जानकारी देना, जैन एवं शाकाहारी स्वच्छता मानकों को लिखित रूप में लागू करना।

यह केवल सुविधा की माँग नहीं है, बल्कि उन मूल्यों और विश्वासों के सम्मान की मांग है जिनके आधार पर हजारों जैन एवं शाकाहारी परिवार इन कंपनियों पर भरोसा करते हैं।

ALDACO
AIM HIGH

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR
ALDACO FOOTWEAR
9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

सम्पादकीय अस्वीकरण : 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित समाचार, लेख एवं विचार संबंधित लेखकों/समाचार प्रेषकों/अन्य स्रोतों के निजी विचार हैं। उनकी सत्यता एवं प्रामाणिकता के लिए वही उत्तरदायी होंगे। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी त्रुटि, मानहानि या विवाद के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस एवं पंजीकरण अधिनियम, 1867 तथा लागू भारतीय कानूनों के अंतर्गत है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा। - डॉ. अमित जैन (सम्पादक/प्रकाशक)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक एवं प्रकाशक अमित जैन द्वारा मुद्रक पारस ऑफसेट प्रा.लि., 118-F, सेक्टर 56, फेज 5, कुंडली इंडस्ट्रियल स्टेट, सोनीपत - 131 028 द्वारा मुद्रित।
केन्द्रीय कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली - 110 001 से प्रकाशित ✻ सम्पर्क : 90197 31906